जीवाजीवाभिगमसूत्र भाग-२ (फोल्डर नं. ००१२२२)

मुख्य टाइटल
प्रकाशकीय ---------- ७
श्री आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर ---------- ८
सम्पादकीय वक्तव्य ---------- ९
अनुक्रमणिका ---------- १३
तृतीय प्रतिपत्ति ---------- ३-११७
लवणसमुद्र की वक्तव्यता ---------- ३
जलवृद्धि का कारण ---------- ६
लवणशिखा की वक्तव्यता ---------- ९
गौतमद्वीप का वर्णन ---------- १६
जम्बूद्वीपगत चन्द्रद्वीपों का वर्णन ---------- १७
धातकीखंडद्वीपगत चन्द्रद्वीपों का वर्णन ---------- २०
कालोदधिसमुद्रगत चन्द्रद्वीपों का वर्णन ---------- २१
देवद्वीपादि में विशेषता ---------- २३
स्वयंभूरमणद्वीपगत चन्द्र-सूर्यद्वीप ---------- २४
गोतीर्थ-प्रतिपादन ---------- २८
धातकीखंड की वक्तव्यता ---------- ३३
कालोदसमुद्र की वक्तव्यता ---------- ३६
पुष्करवरद्वीप की वक्तव्यता ---------- ३९
मानुषोत्तरपर्वत की वक्तव्यता ---------- ४१
समयक्षेत्र (मनुष्यक्षेत्र) का वर्णन ---------- ४३
पुष्करोदसमुद्र की वक्तव्यता ---------- ५६
क्षीरवरद्वीप और क्षीरोदसमुद्र ---------- ६०
घृतवर, घृतोद, क्षोदवर, क्षोदोद की वक्तव्यता ---------- ६१
नन्दीश्वरद्वीप की वक्तव्यता ---------- ६३
अरुणद्वीप का कथन ---------- ६८
जम्बूद्वीप आदि नाम वाले द्वीपों की संख्या ---------- ७३
समुद्रों के उदकों का आस्वाद ---------- ७३
इन्द्रिय पुद्गल परिणाम ---------- ७७
देवशक्ति संबन्धी प्रश्नोत्तर ---------- ७८
ज्योतिष्क चन्द्र-सूर्याधिकार ---------- ८०
वैमानिक-वक्तव्यता ---------- ९३
परिषदों और स्थिति आदि का वर्णन ---------- ९४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बाहल्य आदि प्रतिपादन ---------- १०२
अवधिक्षेत्रादि प्ररूपण ---------- १०८
सामान्यतया भवस्थिति आदि का वर्णन ---------- ११४
चतुर्थ प्रतिपत्ति ---------- ११८-१२३
संसारसमापन्नक जीवों के पंच प्रकार ---------- ११८
अल्पबहुत्वद्वार ---------- १२१
पंचम प्रतिपत्ति ---------- १२४-१४४
संसारसमापन्नक जीवों के छह भेद ---------- १२४
अल्पबहुत्वद्वार ---------- १२६
बादर जीव निरूपण ---------- १३०
बादर की कायस्थिति ---------- १३१
अन्तरद्वार ---------- १३२
अल्पबहुत्वद्वार ---------- १३३
सूक्ष्म बादरों के समुदित अल्पबहुत्व ---------- १३६
निगोद की वक्तव्यता ---------- १३९
निगोदों का अल्पबहुत्व ---------- १४२
षष्ठ प्रतिपत्ति ---------- १४५-१४७
संसारसमापन्नक जीवों के सात भेद, अल्पबहुत्व ---------- १४५
सप्तम प्रतिपत्ति ---------- १४८-१५३
संसारसमापन्नक जीवों के आठ प्रकार ---------- १४८
अष्टम प्रतिपत्ति ---------- १५४-१५५
संसारसमापन्नक जीवों के नौ प्रकार ---------- १५४
नवम प्रतिपत्ति ---------- १५६-१६०
संसारसमापन्नक जीवों के दस प्रकार ---------- १५६
सर्व जीवाभिगम ---------- १६१-२१५
सर्वजीव-द्विविध वक्तव्यता ---------- १६१
सर्वजीव-त्रविध वक्तव्यता ---------- १७६
सर्वजीव-चतुर्विध वक्तव्यता ---------- १८५
सर्वजीव-पञ्चविध वक्तव्यता ---------- १९३
सर्वजीव-षड्विध वक्तव्यता ---------- १९५
सर्वजीव-सप्तविध वक्तव्यता ---------- २००
सर्वजीव-अष्टविध वक्तव्यता ---------- २०३
सर्वजीव-नवविध वक्तव्यता ---------- २०६
सर्वजीव-दसविध वक्तव्यता ---------- २१०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org